शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी

ख़ौफ़नाक जादूगर

और

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की दीगर हिकायात

KHAUFNAK JADUGAR (HINDI)

- बग़ल में तालाब 7
- अज़ाबे क़ब्र से रिहाई 8
- ग़ैब की ख़बर 11
- ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने मुर्दा ज़िन्दा कर दिया 16
- अन्धे को आँखें मिल गईं 19
- क़त्ल के इरादे से आया और मुसलमान हो गया 23
- ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की दुआ [illegible] 23

مكتبة المدينة
دعوتِ اسلامی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ख़ौफ़नाक जादूगर

येह रिसाला **(ख़ौफ़नाक जादूगर)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) **मक-त-बतुल मदीना**
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद-1, गुजरात,
फ़ोन : 079-25391168 MO. 9374031409 E-mail : maktabahind@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ख़ौफ़नाक जादूगर और दीगर हिकायात

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (26 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान ताज़ा होगा और बा'ज़ वस्वसे भी दूर होंगे

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : तुम्हारे दिनों में सब से अफ़्ज़ल दिन जुमुआ़ है, इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह पैदा हुए, इसी में उन की रूह़े मुबा-रका क़ब्ज़ की गई, इसी दिन सूर फूंका जाएगा और इसी दिन हलाकत त़ारी होगी लिहाज़ा इस दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ तक पहुंचाया जाता है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप के विसाल के बा'द दुरूदे पाक आप तक कैसे पहुंचाया जाएगा ?'' इर्शाद फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने अम्बियाए किराम** عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **के अज्साम को खाना ज़मीन पर ह़राम फ़रमाया है ।**''

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج۱ ص۳۹۱ حدیث ۱۰۴۷ داراحیاء التراث العربی بیروت)

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह

मेरी चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1) ख़ौफ़नाक जादूगर

सिल्सिलए आ़लिया चिश्तिया के अ़ज़ीम पेशवा ख़्वाजए ख़्वाजगान, सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़सन सन्जरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर **सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से येह बिशारत मिली : ''ऐ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

मुईनुद्दीन तू हमारे दीन का **मुईन** (या'नी दीन का मददगार) है, तुझे हिन्दूस्तान की विलायत अ़त़ा की, अजमेर जा, तेरे वुजूद से बे दीनी दूर होगी और इस्लाम रौनक़ पज़ीर होगा।" (سیر الاقطاب ص ١٢٤) चुनान्चे सय्यिदुना सुल्त़ानुल हिन्द ख़्वाजा **ग़रीब** नवाज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मदीनतुल हिन्द अजमेर शरीफ़ तशरीफ़ लाए। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मसाइ़ये जमीला से लोग जूक़ दर जूक़ ह़ल्क़ा बगोशे इस्लाम होने लगे। वहां के काफ़िर राजा पृथ्वीराज को इस से बड़ी तशवीश होने लगी। चुनान्चे उस ने अपने यहां के सब से ख़त़रनाक और **ख़ौफ़नाक जादूगर** अजय पाल जोगी को सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुक़ाबले के लिये तय्यार किया। "अजय पाल जोगी" अपने चेलों की जमाअ़त ले कर ख़्वाजा साह़िब رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास पहुंच गया। मुसल्मानों का इज़्त़िराब देख कर हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन के गिर्द एक ह़िसार खींच दिया और हुक्म फ़रमाया कि कोई मुसल्मान इस दाएरे से बाहर न निकले। उधर जादूगरों ने जादू के ज़ोर से पानी, आग और पथ्थर बरसाने शुरूअ़ कर दिये मगर येह सारे वार ह़िसार के क़रीब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

आ कर बेकार हो जाते। अब उन्हों ने ऐसा जादू किया कि **हज़ारों सांप पहाड़ों से उतर कर ख़्वाजा साहिब** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **और मुसल्मानों की त़रफ़ लपकने लगे,** मगर जूं ही वोह ह़िसार के क़रीब आते मर जाते। जब चेले नाकाम हो गए तो ख़ुद उन का गुरू **ख़ौफ़नाक जादूगर** अजय पाल जोगी जादू के ज़रीए़ त़रह़ त़रह़ के शो'बदे दिखाने लगा मगर ह़िसार के क़रीब जाते ही सब कुछ ग़ाइब हो जाता। जब उस का कोई बस न चला तो वोह बिफर गया और ग़ुस्से से पेचो ताब खाते हुए उस ने अपना **मृगछाला** (या'नी हिरनी का चमड़ा बालों वाला) हवा में उछाला और कूद कर उस पर जा बैठा और उड़ता हुवा एक दम बुलन्द हो गया। मुसल्मान घबरा गए कि न जाने अब ऊपर से क्या आफ़त बरपा करेगा ! मेरे आक़ा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस की ह़-र-कत पर मुस्करा रहे थे। **आप** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **ने अपनी ना'लैने मुबारक को इशारा किया, हुक्म पाते ही वोह भी तेज़ी के साथ उड़ती हुई जादूगर के तआ़क़ुब में रवाना हुई और देखते ही देखते ऊपर पहुंच गई और उस के सर पर**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

तड़ातड़ पड़ने लगीं ! हर ज़र्ब में वोह नीचे उतर रहा था, यहां तक कि आ़जिज़ हो कर उतरा और सरकारे ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه **के क़दमों पर गिर पड़ा और सच्चे दिल से तौबा की और मुसल्मान हो गया।** आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन का इस्लामी नाम अ़ब्दुल्लाह रखा। (خزینة الاصفیاء ج۱ص۲۶۲) और वोह ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नज़र फ़ैज़ असर से विलायत के आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ हो कर **अ़ब्दुल्लाह बियाबानी** नाम से मशहूर हो गए। (आफ़्ताबे अजमेर) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

(2) ऊंट बैठे रह गए

सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه जब मदीनतुल हिन्द अजमेर शरीफ़ तशरीफ़ लाए तो अव्वलन एक पीपल के दरख़्त के नीचे तशरीफ़ फ़रमा हुए। येह जगह वहां के काफ़िर राजा पृथ्वीराज चौहान के ऊंटों के लिये मख़्सूस थी। राजा के कारिन्दों ने आ कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर रो'ब झाड़ा और बे अ-दबी के साथ कहा कि आप लोग यहां से चले जाएं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

क्यूं कि येह जगह राजा के ऊंटों के बैठने की है । ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "अच्छा हम लोग जाते हैं तुम्हारे ऊंट ही यहां बैठें ।" चुनान्चे ऊंटों को वहां बिठा दिया गया । सुब्ह़ सारबान आए और ऊंटों को उठाना चाहा, लेकिन बा वुजूद हर त़रह़ की कोशिश के ऊंट न उठे । सारबान ने डरते झिजक्ते ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमते सरापा करामत में ह़ाज़िर हो कर अपनी गुस्ताख़ी की मुआ़फ़ी मांगी । हिन्द के बेताज बादशाह ह़ज़रते सय्यिदुना ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : **"जाओ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से तुम्हारे ऊंट खड़े हो गए ।" जब सारबान वापस हुए तो वाक़ेई सब ऊंट खड़े हो चुके थे !** (ख़्वाजए ख़्वाजगान) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ख़्वाजए हिन्द वोह दरबार है आ'ला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

(3) छागल में तालाब

हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के चन्द मुरीदीन एक बार अजमेर शरीफ़ के मशहूर तालाब **अना सागर** पर ग़ुस्ल करने गए। काफ़िरों ने देख कर शोर मचा दिया कि येह मुसल्मान हमारे तालाब को "नापाक" कर रहे हैं। चुनान्चे वोह ह़ज़रात लौट गए और जा कर सारा माजरा ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक छागल (पानी रखने का मिट्टी का बरतन) दे कर ख़ादिम को हुक्म दिया कि इस को तालाब से भर कर ले आओ। **ख़ादिम ने जा कर जूं ही छागल को पानी में डाला, सारे का सारा तालाब उस छागल में आ गया !** लोग पानी न मिलने पर बे क़रार हो गए और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमते सरापा करामत में ह़ाज़िर हो कर फ़रियाद करने लगे। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **ख़ादिम को हुक्म दिया कि जाओ और छागल का पानी वापस तालाब में उंडेल दो। ख़ादिम ने हुक्म की ता'मील की और अना सागर फिर पानी से लबरेज़ हो गया !** (ख़्वाजए ख़्वाजगान) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلیٰ)

हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

है तेरी ज़ात अ़जब बह्रे ह़क़ीक़त प्यारे

किसी तैराक ने पाया न कनारा तेरा

(4) अ़ज़ाबे क़ब्र से रिहाई

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने एक मुरीद के जनाज़े में तशरीफ़ ले गए, नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर अपने दस्ते मुबारक से **क़ब्र** में उतारा। ह़ज़रते सय्यिदुना **बख़्तियार काकी** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : तदफ़ीन के बा'द तक़रीबन सारे लोग चले गए, मगर हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस की **क़ब्र** के पास तशरीफ़ फ़रमा रहे। अचानक आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक दम ग़मगीन हो गए। कुछ देर के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़बान पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ जारी हुवा और आप मुत्मइन हो गए। मेरे इस्तिफ़्सार पर फ़रमाया :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

मेरे इस मुरीद पर अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आ पहुंचे जिस पर मैं परेशान हो गया। इतने में मेरे मुर्शिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा **उ़स्मान हर-वनी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی तशरीफ़ लाए और फ़िरिश्तों से उस की सिफ़ारिश करते हुए फ़रमाया : ऐ फ़िरिश्तो ! येह बन्दा मेरे मुरीद **मुईनुद्दीन** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मुरीद है, इस को छोड़ दो। फ़िरिश्ते कहने लगे : "येह बहुत ही गुनहगार शख़्स था।" अभी येह गुफ़्त-गू हो ही रही थी कि ग़ैब से आवाज़ आई : **"ऐ फ़िरिश्तो ! हम ने उ़स्मान हर-वनी के सदक़े मुईनुद्दीन चिश्ती के मुरीद को बख़्श दिया।"** (معینُ الاَرواح)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से दर्स मिला कि किसी पीरे कामिल का मुरीद बन जाना चाहिये कि उस की ब-र-कत से **अ़ज़ाबे क़ब्र** दूर होने की उम्मीद है।

(5) मज्ज़ूब का जूठा

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

की उ़म्र शरीफ़ जब पन्दरह साल की हुई तो वालिदे गिरामी का सायए शफ़्क़त सर से उठ गया । विरासत में एक बाग़ और एक पनचक्की मिली उसी को अपने लिये ज़रीअ़ए मआ़श बनाया, ख़ुद ही बाग़ की निगहबानी करते और उस के दरख़्तों की आबयारी फ़रमाते । एक रोज़ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने बाग़ में पौदों को पानी दे रहे थे कि उस दौर के मशहूर मज्ज़ूब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम क़न्दौज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बाग़ में दाख़िल हो गए । जूं ही आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नज़र उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दे पर पड़ी, फ़ौरन सारा काम छोड़ कर दौड़े और सलाम कर के दस्त बोसी की और निहायत ही अदब से एक दरख़्त के साए में बिठाया फिर उन की ख़िदमत में ताज़ा अंगूरों का एक ख़ोशा इन्तिहाई आ़जिज़ी के साथ पेश किया और दो ज़ानू हो कर बैठ गए । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के वली को उस नौ जवान बाग़बान का अन्दाज़ भा गया, ख़ुश हो कर बग़ल से एक खली का टुकड़ा निकाला और चबा कर ख़्वाजा साह़िब** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **के मुंह में डाल दिया । खली का टुकड़ा**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب وترہیب)

जूं ही ह़ल्क़ से नीचे उतरा, ख़्वाजा साह़िब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **के दिल की कैफ़िय्यत यकदम बदल गई और दिल दुन्या से उचाट हो गया।** आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बाग़, पनचक्की और साज़ो सामान बेच डाला, सारी क़ीमत फु-क़रा व मसाकीन में तक़्सीम कर दी और हुसूले इल्मे दीन की ख़ातिर राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर बन गए। (مرآۃ الاسرار ص ۵۹۳، تاریخ فرشتہ ج ۲ ص ۷٤٠) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर बे ह़िसाब करम नवाज़ियां फ़रमाई और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام के पेशवा और हिन्दूस्तान के **बेताज बादशाह** बन गए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़ुफ़-तगाने शबे ग़फ़्लत को जगा देता है

सालहा साल वोह रातों का न सोना तेरा

(6) ग़ैब की ख़बर

एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ औह़दुद्दीन किरमानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی और ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शहाबुद्दीन सुहर वर्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی एक जगह तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक लड़का (सुल्त़ान शम्सुद्दीन अल्तमश) तीर व कमान लिये वहां से गुज़रा । उसे देखते ही हुज़ूर ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : **''येह बच्चा देहली का बादशाह हो कर रहेगा ।'' बिल आख़िर येही हुवा कि थोड़े ही अ़र्से में वोह देहली का बादशाह बन गया ।** (سیرُ الاقطاب) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तुम्हारे मुंह से जो निकली वोह बात हो के रही
कहा जो दिन को कि शब है तो रात हो के रही

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है कि शैत़ान किसी के दिल में येह वस्वसा डाले कि ग़ैब का इ़ल्म तो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही को है ख़्वाजा साह़िब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कैसे ग़ैब की ख़बर दे दी ? तो अ़र्ज़ येह है कि इस में कोई शक नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (كنزالعمال)

कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **आ़लिमुल ग़ैबि वश्शहादह** है, उस का **इ़ल्मे ग़ैब** ज़ाती है और हमेशा हमेशा से है जब कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का **इ़ल्मे ग़ैब** अ़ताई भी है और हमेशा हमेशा से भी नहीं । उन्हें जब से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बताया तब से है और जितना बताया उतना ही है, उस के बताए बिग़ैर एक ज़र्रे का भी नहीं । हो सकता है किसी को येह **वस्वसा** आए कि जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बता दिया तो ग़ैब, ग़ैब ही न रहा । इस का जवाब आगे आ रहा है कि कु़रआने पाक में नबी के **इ़ल्मे ग़ैब** को ग़ैब ही कहा गया है । अब रहा येह कि किस को कितना **इ़ल्मे ग़ैब** मिला, येह देने वाला जाने और लेने वाला जाने । **इ़ल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में ĐďÚă 30 सू-रतुत्तक्वीर आयत नम्बर 24 में इर्शाद होता है :

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ

(پ ٣٠ التكوير ٢٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ग़ैब बताने में बख़ील नहीं ।

इस आयते करीमा के तह़्त तफ़्सीरे **ख़ाज़िन** में है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

''मुराद येह है कि मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास **इल्मे ग़ैब** आता है तो तुम पर इस में बुख़्ल नहीं फ़रमाते बल्कि तुम को बताते हैं ।'' (تفسیر خازن ج٤ ص٣٥٧) इस आयत व तफ़्सीर से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों को **इल्मे ग़ैब** बताते हैं और ज़ाहिर है बताएगा वोही जो ख़ुद भी जानता हो ।

ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का इल्मे ग़ैब

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह के **इल्मे ग़ैब** के बारे में पारह 3 सूरए आले इमरान आयत नम्बर 49 में इर्शाद होता है :

وَ اُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۴۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो अपने घरों में जम्अ़ कर रखते हो । बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुन्द-र-जए बाला आयत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر)

में ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام साफ़ साफ़ ए'लान फ़रमा रहे हैं कि **तुम जो कुछ खाते हो वोह मुझे मा'लूम हो जाता है और जो कुछ घर में बचा कर रखते हो उस का भी पता चल जाता है। अब येह इल्मे ग़ैब नहीं तो और क्या है ? जब ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **की येह शान है तो आक़ाए ईसा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **की क्या शान होगी ? आप** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **से आख़िर क्या छुपा रह सकता है ? आप** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **ने तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **जो कि ग़ैबुल ग़ैब है, उस को भी चश्माने सर से मुला-ह़ज़ा फ़रमा लिया।**

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद (ह़दाइक़े बख़्शिश)

बहर ह़ाल रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ ने अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इल्मे ग़ैब से नवाज़ा है अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की तो बड़ी शान है, फ़ैज़ाने अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से

औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام भी ग़ैब की ख़बरें बता सकते हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने **''अख़्बारुल अख़्यार'' सफ़ह़ा नम्बर** 15 में ह़ुज़ूरे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का येह इर्शादे मुअ़ज़्ज़म नक़्ल किया है : **''अगर शरीअ़त ने मेरे मुंह में लगाम न डाली होती तो मैं तुम्हें बता देता कि तुम ने घर में क्या खाया है और क्या रखा है, मैं तुम्हारे ज़ाहिर व बात़िन को जानता हूं क्यूं कि तुम मेरी नज़र में आर पार नज़र आने वाले शीशे की त़रह़ हो।''**

ह़ज़रते मौलाना रूमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **मस्नवी शरीफ़** में फ़रमाते हैं :

لَوحِ محفوظ اَست پیشِ اولیاء
اَز چہ محفوظ اَست محفوظ اَز خطا

(या'नी लौह़े मह़फ़ूज़ औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के पेशे नज़र होता है जो कि हर ख़त़ा से मह़फ़ूज़ होता है)

(7) मुर्दा ज़िन्दा कर दिया !

अजमेर शरीफ़ के ह़ाकिम ने एक बार किसी शख़्स को

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

बे गुनाह सूली पर चढ़ा दिया और उस की मां को कहला भेजा कि अपने बेटे की लाश आ कर ले जाए। मगर वहां जाने के बजाए उस की मां रोती हुई ख़्वाजए ख़्वाजगान सरकारे ग़रीब नवाज़ सय्यिदुना ह़सन सन्जरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ! की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुई और फ़रियाद की : "आह ! मेरा सहारा छिन गया, मेरा घर उजड़ गया, या ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ! मेरा एक ही बेटा था उसे ह़ाकिमे ज़ालिम ने बे क़ुसूर सूली पर चढ़ा दिया है।" येह सुन कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه जलाल में आ कर उठे और फ़रमाया : मुझे अपने बेटे की लाश पर ले चलो। चुनान्चे उस के साथ आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस की लाश पर आए और उस की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : **"ऐ मक़्तूल ! अगर ह़ाकिमे वक़्त ने तुझे बे क़ुसूर सूली दी है तो अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **के हुक्म से उठ खड़ा हो।" फ़ौरन लाश में ह़-र-कत पैदा हुई और देखते ही देखते वोह शख़्स ज़िन्दा हो कर खड़ा हो गया।** (माहे अजमेर) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

क्या बन्दा किसी को ज़िन्दा कर सकता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कहीं शैत़ान येह वस्वसा न डाले कि मारना और जिलाना तो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का काम है कोई बन्दा येह कैसे कर सकता है ? तो अ़र्ज़ येह है कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही फ़ाइले ह़क़ीक़ी है मगर वोह अपनी क़ुदरते कामिला से जिस को चाहता है इख़्तियारात अ़त़ा फ़रमाता है। देखिये ! बे जान को जान बख़्शना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का काम है, मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दिये हुए इख़्तियारात से ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी ऐसा करते थे। चुनान्चे पारह 3 सूरए आले इमरान आयत नम्बर 49 में है :

اَنِّیْۤ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّیْنِ كَهَیْـَٔةِ الطَّیْرِ فَاَنْفُخُ فِیْهِ فَیَكُوْنُ طَیْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ

(پ ۳ آل عمران ٤٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्द की सी मूरत बनाता हूं फिर उस में फूंक मारता हूं तो वोह फ़ौरन परिन्द हो जाती है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हुक्म से।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

(8) अन्धे को आंखें मिल गईं

कहते हैं : एक बार औरंग ज़ैब आ़लमगीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر सुल्त़ानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हुए। इह़ात़ा में एक अन्धा फ़क़ीर बैठा सदा लगा रहा था : या ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ! आंखें दे। आप ने उस फ़क़ीर से दरयाफ़्त किया : बाबा ! कितना अ़र्सा हुवा आंखें मांगते हुए ? बोला, बरसों गुज़र गए मगर मुराद पूरी ही नहीं होती। फ़रमाया : मैं मज़ारे पाक पर ह़ाज़िरी दे कर थोड़ी देर में वापस आता हूं अगर आंखें रोशन हो गईं फ़बिहा (या'नी बहुत ख़ूब) वरना क़त्ल करवा दूंगा। येह कह कर फ़क़ीर पर पहरा लगा कर बादशाह ह़ाज़िरी के लिये अन्दर चले गए। उधर फ़क़ीर पर गिर्या त़ारी था और रो रो कर फ़रियाद कर रहा था : या ख़्वाजा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ! पेहले सिर्फ़ आंखों का मस्अला था अब तो जान पर बन गई है, अगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने करम न फ़रमाया तो मारा जाऊंगा। **जब बादशाह ह़ाज़िरी दे कर लौटे तो उस की आंखें रोशन हो चुकी थीं।** बादशाह ने मुस्करा कर फ़रमाया कि तुम अब तक बे दिली और बे तवज्जोही

से मांग रहे थे और अब जान के ख़ौफ़ से तुम ने दिल की तड़प के साथ सुवाल किया तो तुम्हारी मुराद पूरी हो गई ।

अब चश्मे शिफ़ा सूए गुनहगार हो ख़्वाजा

इस्यां के मरज़ ने है बड़ा ज़ोर दिखाया

अब तो डॉक्टर भी बीना करने लगे हैं !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शायद किसी के ज़ेहन में येह सुवाल उभरे कि मांगना तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से चाहिये और वोही देता है, येह कैसे हो सकता है कि **ख़्वाजा साहिब** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कोई आंखें मांगे और वोह अ़त़ा भी फ़रमा दें ! जवाबन अ़र्ज़ है कि ह़क़ीक़तन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही देने वाला है, मख़्लूक़ में से जो भी जो कुछ देता है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही से ले कर देता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा के बिग़ैर कोई एक ज़र्रा भी नहीं दे सकता । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से सब कुछ हो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

सकता है। अगर किसी ने ख़्वाजा साहिब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से आंखें मांग लीं और उन्हों ने अ़त़ाए ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से इनायत फ़रमा दीं तो आख़िर येह ऐसी कौन सी बात है जो समझ में नहीं आती ? येह मस्अला तो फ़ी ज़माना फ़न्ने त़िब ने भी ह़ल कर डाला है ! हर कोई जानता है कि आज कल डॉक्टर ऑपरेशन के ज़रीए मुर्दा की आंखें लगा कर अन्धों को बीना (या'नी देखता) कर देते हैं । बस इसी त़रह़ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी एक अन्धे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा रूह़ानी क़ुव्वत से ना बीनाई के मरज़ से शिफ़ा दे कर बीना (या'नी देखता) कर दिया । बहर ह़ाल अगर कोई येह अ़क़ीदा रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी नबी या वली को मरज़ से शिफ़ा देने या कुछ अ़त़ा करने का इख़्तियार दिया ही नहीं है तो ऐसा शख़्स ह़ुक्मे क़ुरआन को झुटला रहा है । चुनान्चे पारह 3 सूरए आले इमरान आयत नम्बर 49 में ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का क़ौल नक़्ल किया गया है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ

(پ ۳ آل عمران ٤٩)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले (या'नी कोढ़ी) को और मैं मुर्दे जिलाता हूं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हुक्म से।

देखा आप ने ! हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام साफ़ साफ़ ए'लान फ़रमा रहे हैं कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बख़्शी हुई क़ुदरत से मादर ज़ाद अन्धों को बीनाई और कोढ़ियों को शिफ़ा देता हूं हत्ता कि मुर्दों को भी ज़िन्दा कर दिया करता हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को त़रह़ त़रह़ के इख़्तियारात अ़त़ा किये जाते हैं और फ़ैज़ाने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को भी इख़्तियारात दिये जाते हैं, लिहाज़ा वोह भी **शिफ़ा** दे सकते हैं और बहुत कुछ अ़त़ा फ़रमा सकते हैं।

मुह़्ये दीं ग़ौस हैं और ख़्वाजा मुईनुद्दीं हैं
ऐ ह़सन क्यूं न हो मह़फ़ूज़ अ़क़ीदा तेरा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

(9) क़त्ल के इरादे से आया और मुसल्मान हो गया

एक दफ़्आ एक काफ़िर ख़न्जर बग़ल में छुपा कर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को क़त्ल करने के इरादे से आया। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस के तेवर भांप लिये और मुअमिनाना फ़िरासत से उस का इरादा मा'लूम कर लिया। जब वोह क़रीब आया तो उस से फ़रमाया : "तुम जिस इरादे से आए हो उस को पूरा करो मैं तुम्हारे सामने मौजूद हूं।" येह सुन कर उस शख़्स के जिस्म पर लरज़ा त़ारी हो गया। ख़न्जर निकाल कर एक त़रफ़ फेंक दिया और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़दमों पर गिर पड़ा और सच्चे दिल से तौबा की और मुसल्मान हो गया।

(مرآۃ الاسرار مترجم ص ۵۹۸، الفیصل مرکز الاولیاء لاہور)

दाता गन्ज बख़्श رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ारे पुर अन्वार पर आमद

मर्कज़ुल औलिया लाहोर में ह़ज़रते अ़ली बिन उ़स्मान हिजवेरी अल मा'रूफ़ **दाता गन्ज बख़्श** के मज़ारे पुर अन्वार पर क़ियाम फ़रमा कर रूह़ानी फ़ुयूज़ से मालामाल हुए और ब वक़्ते रुख़्सत येह शे'र पढ़ा :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

گنج بخش فیضِ عالم مظہرِ نورِ خدا
ناقصاں را پیر کامل کاملاں را رہنما
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

विसाल शरीफ़

6 र-जबुल मुरज्जब 633 सिने हिजरी को इस दुन्याए फ़ानी से रुख़्सत हुए। (اخبار الاخیار ص ۲۳ فاروق اکیڈمی، ضلع خیرپور گمبٹ)

पेशानी पर नक़्शे मुबारक

विसाल के बा'द आप की नूरानी पेशानी पर येह नक़्श ज़ाहिर हुवा :

حَبِیْبُ اللّٰہِ مَاتَ فِیْ حُبِّ اللّٰہ

या'नी **अल्लाह** का ह़बीब **अल्लाह** की **मह़ब्बत** में दुन्या से गया। (اخبار الاخیار ص ۲۳)

ख़्वाजा साह़िब के तीन इर्शादात

(1) नेकों की सोह़बत नेक काम से बेहतर है और बुरे लोगों की सोह़बत बदी करने से बदतर है। (2) बद बख़्ती की अ़लामत येह है कि गुनाह करता रहे फिर इस के बा वुजूद **अल्लाह** की बारगाह में ख़ुद को मक़्बूल समझे। (3) ख़ुदा का दोस्त वोह है जिस में तीन ख़ूबियां हों : एक सख़ावत दरिया जैसी दूसरे शफ़्क़त आफ़्ताब की त़रह़ तीसरे तवाज़ोअ़ ज़मीन की मानिन्द। (اخبار الاخیار ص ۲۳، ۲۴)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

अजमेर बुलाया मुझे अजमेर बुलाया

अजमेर बुलाया, मुझे अजमेर बुलाया
अजमेर बुला कर मुझे मेहमान बनाया
हो शुक्र अदा कैसे कि मुझ पापी को ख़्वाजा
अजमेर बुला कर मुझे दरबार दिखाया

सुल्ताने मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत का भिकारी
बन कर मैं शहा ! आप के दरबार में आया
दुन्या की हुकूमत दो न दौलत दो न सरवत
हर चीज़ मिली जामे महब्बत जो पिलाया

क़दमों से लगा लो, मुझे क़दमों से लगा लो
ख़्वाजा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه है ज़माने ने बड़ा मुझ को सताया
डूबा, अभी डूबा, मुझे लिल्लाह عَزَّوَجَلَّ संभालो
सैलाब गुनाहों का बड़े ज़ोर से आया

अब चश्मे शिफ़ा, बहरे ख़ुदा सूए मरीज़ां
इस्यां के मरज़ ने है बड़ा ज़ोर दिखाया
सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बना दीजिये आ़शिक़
येह अ़र्ज़ लिये शाह कराची से मैं आया

या ख़्वाजा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه करम कीजिये हों ज़ुल्मतें काफ़ूर
बात़िल ने बड़े ज़ोर से सर अपना उठाया
अ़त्तार करम ही से तेरे जम के खड़ा है
दुश्मन ने गिराने को बड़ा ज़ोर लगाया